INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
www.ijprems.com
editor@ijprems.com
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

वैश्विक राजनीति में G–20 और भारत के लिए मायने

ज्योति कुमारी

शोध छात्रा, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर

सारांशः

G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच है जिसमें विश्व की 19 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। यह मंच वैश्विक आर्थिक स्थिरता, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, व्यापार और निवेश जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने के लिए कार्य करता है। G20 का गठन 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद हुआ था, लेकिन 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के दौरान इसे और अधिक प्रभावी बनाया गया। वर्तमान समय में, यह मंच न केवल आर्थिक बल्कि भू–राजनीतिक मुद्दों पर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारत के लिए G20 की सदस्यता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश को वैश्विक नीति निर्माण में एक मजबूत आवाज प्रदान करती है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और इसका G20 के भीतर प्रभाव बढ़ता जा रहा है। 2023 में भारत की अध्यक्षता के दौरान, ''वसुधैव कुटुंबकम'' (One Earth, One Family, One Future) की थीम को अपनाया गया, जिसमें समावेशी विकास, जलवायु कार्रवाई, डिजिटल अर्थव्यवस्था और बहुपक्षीय संस्थानों के सुधार पर ध्यान केंद्रित किया गया। G20 में भारत की भूमिका आर्थिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। एक ओर, भारत अपने डिजिटल इंडिया अभियान, स्टार्टअप और इनोवेशन को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला सकता है, वहीं दूसरी ओर, विकासशील देशों की चिंताओं को उजागर कर सकता है। भारत जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संक्रमण और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को बढ़ावा देने में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। वैश्विक राजनीति में G20 की भूमिका केवल आर्थिक मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य संकट (जैसे COVID–19 महामारी), खाद्य सुरक्षा, और वैश्विक व्यापार व्यवस्था के पुनर्गठन जैसे क्षेत्रों में भी अहम योगदान देता है। भारत की भागीदारी इसे वैश्विक शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाती है।

हालांकि, भारत को कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है, जैसे कि वैश्विक शक्ति संघर्ष (अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता), जलवायु वित्त पोषण, और बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में सुधार। इन मुद्दों से निपटने के लिए भारत को कूटनीतिक रूप से सक्रिय रहना होगा और वैश्विक सहयोग को मजबूत करना होगा। दरअसल, G20 भारत के लिए न केवल आर्थिक लाभ का मंच है, बल्कि यह वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ने का भी एक अवसर है। भारत की सक्रिय भागीदारी और अध्यक्षता ने इसे एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभरने में मदद की है, जिससे यह भविष्य की वैश्विक राजनीति में एक निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

प्रस्तावना

G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) वैश्विक राजनीति और अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण मंच है, जिसमें दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ सम्मिलित हैं। यह मंच अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिरता, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, व्यापार और निवेश जैसे ज्वलंत मुद्दों पर सहयोग और समन्वय बढ़ाने का कार्य करता है। 21वीं सदी में वैश्विक शक्ति संरचना में बदलाव के साथ, G20 केवल एक आर्थिक मंच न रहकर एक प्रमुख भू–राजनीतिक संगठन के रूप में उभर रहा है, जिसका प्रभाव विश्व राजनीति पर गहराई से पड़ रहा है। भारत, जो कि विश्व की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, के लिए G20 की सदस्यता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह मंच भारत को वैश्विक निर्णय–प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान करता है। हाल के वर्षों में, भारत ने G20 के माध्यम से वैश्विक व्यापार, डिजिटल अर्थव्यवस्था, जलवायु न्याय, और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2023 में भारत की ळ20 अध्यक्षता इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय रही, जहाँ ''वसुधैव कुटुंबकम'' (One Earth, One Family, One Future) की अवधारणा को वैश्विक एजेंडा में शामिल किया गया।

यह शोध आलेख G20 की वैश्विक राजनीति में भूमिका, भारत के लिए इसके रणनीतिक मायने, तथा इससे मिलने वाले अवसरों और चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करेगा। भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका को ध्यान में रखते हुए, यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि G20 किस प्रकार वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित कर रहा है और भारत इसके माध्यम से किस प्रकार अपनी स्थिति को मजबूत कर सकता है। इसके साथ ही, यह आलेख बहुपक्षीय कूटनीति में भारत के योगदान और G20 के तहत भविष्य की संभावनाओं का भी आकलन करेगा।

मूल शब्द – वैश्विक राजनीति, G20, अर्थव्यवस्था, बहुपक्षीय सहयोग, कूटनीति, सतत विकास,जलवायु परिवर्तन,रणनीतिक भागीदारी, वैश्विक शक्ति संतुलन,नवाचार, डिजिटल अर्थव्यवस्था, भू–राजनीति, विकासशील देश, नीति निर्माण,भारत की अध्यक्षता G20 क्या है?

INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
www.ijprems.com
editor@ijprems.com
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) विश्व की 19 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं और यूरोपीय संघ का एक अंतरराष्ट्रीय मंच है, जिसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता, सतत विकास, व्यापार, निवेश और वित्तीय सुधारों को बढ़ावा देना है। इसका गठन 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद किया गया था, ताकि वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रमुख देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद, G20 को एक प्रभावी नीति–निर्माण मंच के रूप में और अधिक सशक्त बनाया गया। G20 में 19 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं। इसके सदस्य देश हैं अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका। यूरोपीय संघ इसमें एक इकाई के रूप में शामिल होता है। ये देश विश्व की लगभग 85% जीडीपी, 75% वैश्विक व्यापार, और दो–तिहाई वैश्विक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं।[1] G20 का प्राथमिक उद्देश्य वैश्विक अर्थव्यवस्था को स्थिर और संतुलित बनाए रखना है। यह मंच अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IMF, वर्ल्ड बैंक) के सुधार पर कार्य करता है। यह वैश्विक व्यापार और निवेश को सुगम बनाने के लिए नीतियों पर चर्चा करता है। G20, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और पेरिस समझौते को लागू करने में योगदान देता है। यह मंच डिजिटल क्रांति को समर्थन देता है और साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दों पर चर्चा करता है। भारत 1999 से G20 का सदस्य है और 2023 में पहली बार इसकी अध्यक्षता की। भारत ने इस दौरान ''वसुधैव कुटुंबकम "One Earth,One Family,One Future'' की थीम को अपनाया और जलवायु न्याय, सतत विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था, और वैश्विक व्यापार सुधार पर ध्यान केंद्रित किया।[2]

G20 का उद्देश्य एवं वैश्विक राजनीति में इसका महत्व

G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंच है, जिसमें विश्व की 19 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। यह मंच वैश्विक आर्थिक स्थिरता, वित्तीय सुधार, व्यापार नीति, सतत विकास, जलवायु परिवर्तन और अन्य प्रमुख वैश्विक मुद्दों पर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है। G20 की भूमिका केवल आर्थिक मामलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति को भी प्रभावित करता है और अंतरराष्ट्रीय शक्ति संतुलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में, जब दुनिया विभिन्न आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियों का सामना कर रही है, G20 जैसे मंच की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है।

G20 का उद्देश्य

G20 का गठन 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद किया गया था, लेकिन 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के दौरान इसे और अधिक प्रभावशाली बनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करना था, लेकिन समय के साथ इसके कार्यक्षेत्र का विस्तार हुआ है। G20 के प्रमुख उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है:

1. वैश्विक आर्थिक स्थिरता एवं समृद्धि

G20 का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य वैश्विक अर्थव्यवस्था को स्थिर और संतुलित बनाए रखना है। यह मंच वित्तीय संकटों से निपटने, मंदी से उबरने और सतत आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक नीतियों और रणनीतियों पर चर्चा करता है।[3]

2. वित्तीय सुधार और पारदर्शिता

G20, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IMF, वर्ल्ड बैंक) के सुधार पर बल देता है ताकि वे अधिक समावेशी और प्रभावी बन सकें। यह मंच भ्रष्टाचार, कर चोरी और अवैध वित्तीय लेनदेन को रोकने के लिए भी नीतियां निर्धारित करता है।

3. अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को बढ़ावा देना

G20, मुक्त और निष्पक्ष व्यापार को बढ़ावा देने के लिए काम करता है। यह वैश्विक व्यापारिक विवादों को हल करने, व्यापारिक बाधाओं को कम करने और निवेश के अनुकूल माहौल बनाने के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा करता है।

4. सतत विकास और जलवायु परिवर्तन से निपटना

संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और पेरिस जलवायु समझौते को लागू करने में G20 की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह मंच कार्बन उत्सर्जन को कम करने, हरित ऊर्जा को बढ़ावा देने और जलवायु न्याय को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों पर कार्य करता है।

5. डिजिटल परिवर्तन और नवाचार को बढ़ावा देना

आज के दौर में डिजिटल अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। G20, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल व्यापार और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नीतियां बनाता है।

6. वैश्विक स्वास्थ्य और महामारी प्रबंधन

COVID–19 महामारी के दौरान G20 ने स्वास्थ्य आपातकालीन प्रतिक्रिया, टीका वितरण और स्वास्थ्य संबंधी बुनियादी ढांचे में निवेश को प्राथमिकता दी। यह मंच वैश्विक स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग को मजबूत करता है।[4]

INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
www.ijprems.com
editor@ijprems.com
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

वैश्विक राजनीति में G20 का महत्व

G20 केवल एक आर्थिक संगठन नहीं हैय यह वैश्विक राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके प्रभाव को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैः

1. बहुपक्षीय सहयोग को मजबूत करना

G20 एक ऐसा मंच है जहाँ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ आपसी सहयोग और संवाद के माध्यम से वैश्विक समस्याओं का समाधान निकालती हैं। यह मंच अंतरराष्ट्रीय विवादों को सुलझाने में एक प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

2. वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित करना

G20 की बैठकों में विश्व की प्रमुख शक्तियाँ भाग लेती हैं, जिससे यह एक महत्वपूर्ण भू–राजनीतिक मंच बन जाता है। अमेरिका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ और भारत जैसे प्रमुख खिलाड़ी G20 के माध्यम से अपनी नीतियों और दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हैं।

3. विकासशील देशों की भागीदारी

G20 केवल विकसित देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और इंडोनेशिया जैसे विकासशील देश भी शामिल हैं। यह मंच विकासशील देशों की चिंताओं और आवश्यकताओं को वैश्विक नीति निर्माण में शामिल करने में मदद करता है।

4. जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय नीतियों पर वैश्विक सहमति

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। G20 के माध्यम से विभिन्न देश अपने जलवायु लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं और कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने के लिए रणनीतियाँ बनाते हैं।

5. भू–राजनीतिक विवादों को कम करने में योगदान

वैश्विक स्तर पर कई राजनीतिक विवाद चल रहे हैं, जैसे कि अमेरिका–चीन व्यापार युद्ध, रूस–यूक्रेन संघर्ष, और मध्य पूर्व संकट। G20 एक ऐसा मंच है जहाँ कूटनीतिक वार्ताओं के माध्यम से इन विवादों को सुलझाने के प्रयास किए जा सकते हैं।[5]

भारत और G20 : रणनीतिक महत्व

भारत G20 का एक महत्वपूर्ण सदस्य है और 2023 में पहली बार इसकी अध्यक्षता की। भारत के लिए G20 का महत्व निम्नलिखित कारणों से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैः

1. वैश्विक नीति निर्माण में प्रभाव बढ़ाना

G20 के माध्यम से भारत अपनी वैश्विक स्थिति को मजबूत कर सकता है और बहुपक्षीय संस्थानों में अपनी भूमिका को सशक्त बना सकता है।

2. आर्थिक और व्यापारिक अवसरों का विस्तार

भारत, जो दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, G20 के माध्यम से वैश्विक व्यापार और निवेश को बढ़ावा दे सकता है।

3. जलवायु नेतृत्व को बढ़ावा देना

भारत अक्षय ऊर्जा और जलवायु न्याय के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकता है और G20 मंच के माध्यम से अपनी नीतियों को आगे बढ़ा सकता है।

4. वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज बनना

भारत विकासशील देशों की चिंताओं को वैश्विक मंच पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है और उन्हें आवश्यक वित्तीय और तकनीकी सहायता दिलाने में सहायता कर सकता है।[6]

5. बहुपक्षीय कूटनीति को मजबूत करना

G20 के माध्यम से भारत अमेरिका, यूरोपीय संघ, चीन और रूस जैसे प्रमुख वैश्विक खिलाड़ियों के साथ अपने कूटनीतिक संबंधों को बेहतर बना सकता है।

तृतीय विश्व के लिए G20 की भूमिका एवं महत्व

तृतीय विश्व (Global South) वे देश हैं जो आर्थिक रूप से विकसित देशों की तुलना में पिछड़े माने जाते हैं और जिनकी अर्थव्यवस्था अभी विकासशील अवस्था में है। इनमें मुख्य रूप से एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश शामिल हैं।[7] ये देश अक्सर गरीबी, असमानता, जलवायु परिवर्तन, वित्तीय अस्थिरता, और व्यापारिक असंतुलन जैसी चुनौतियों से जूझते हैं। G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) विश्व की 19 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं और यूरोपीय संघ का एक समूह है, जिसका उद्देश्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता और

www.ijprems.com
editor@ijprems.com
INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

सतत विकास को बढ़ावा देना है। यह मंच तृतीय विश्व के देशों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है, जिससे वे वैश्विक आर्थिक नीति निर्माण में भाग ले सकते हैं और अपनी समस्याओं का समाधान निकाल सकते हैं।

तृतीय विश्व के लिए G20 की भूमिका

1. आर्थिक विकास और वित्तीय सहयोग

तृतीय विश्व के कई देशों की अर्थव्यवस्था अभी विकसित नहीं हुई है और वे विदेशी निवेश, तकनीकी सहयोग, और वित्तीय सहायता पर निर्भर रहते हैं। G20 मंच विकासशील देशों को अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IMF, वर्ल्ड बैंक) से वित्तीय सहायता प्राप्त करने में मदद करता है।

2. व्यापार और निवेश के अवसर

वैश्विक व्यापार और निवेश में तृतीय विश्व के देशों की भागीदारी बढ़ाने के लिए G20 एक प्रभावी मंच प्रदान करता है। यह मुक्त व्यापार, व्यापारिक बाधाओं को कम करने, और निवेश के अनुकूल नीतियों को बढ़ावा देने का कार्य करता है।

3. जलवायु परिवर्तन और सतत विकास

तृतीय विश्व के देश जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, लेकिन उनके पास इसे नियंत्रित करने के लिए आवश्यक संसाधन नहीं होते। G20 मंच जलवायु वित्त (Climate Finance) को बढ़ावा देकर इन देशों को हरित ऊर्जा और सतत विकास की ओर बढ़ने में सहायता करता है।

4. गरीबी और असमानता को कम करना

तृतीय विश्व के देशों में गरीबी और असमानता एक बड़ी समस्या है। G20 मंच के माध्यम से विकासशील देशों को शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल समावेशन और बुनियादी ढांचे में निवेश के लिए सहायता प्रदान की जाती है।

5. वैश्विक निर्णय–प्रक्रिया में भागीदारी

अक्सर वैश्विक नीतियाँ विकसित देशों द्वारा बनाई जाती हैं, जिससे तृतीय विश्व के देशों की आवाज अनसुनी रह जाती है। G20, विकासशील देशों को नीति निर्माण में भाग लेने और अपने मुद्दों को वैश्विक मंच पर उठाने का अवसर देता है।[8]

तृतीय विश्व के लिए G20 का महत्व

1. वैश्विक आर्थिक संतुलन को बनाए रखना

तृतीय विश्व के देशों की अर्थव्यवस्थाएँ विकसित देशों की तुलना में अधिक अस्थिर होती हैं। G20 के माध्यम से, इन देशों को आर्थिक संकटों से निपटने, वित्तीय सहायता प्राप्त करने और वैश्विक व्यापार में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर मिलता है।

2. टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और डिजिटल समावेशन

G20 डिजिटल अर्थव्यवस्था और टेक्नोलॉजी ट्रांसफर को बढ़ावा देता है, जिससे तृतीय विश्व के देशों को तकनीकी नवाचार का लाभ मिल सकता है। इससे डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) को कम किया जा सकता है।

3. बहुपक्षीय कूटनीति को बढ़ावा देना

तृतीय विश्व के देश अक्सर अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सीमित शक्ति रखते हैं। G20 उन्हें बहुपक्षीय कूटनीति का अवसर प्रदान करता है, जहाँ वे अन्य देशों के साथ सहयोग कर सकते हैं और अपनी स्थिति मजबूत कर सकते हैं।

4. खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा

कई विकासशील देश खाद्य और ऊर्जा संकट से जूझ रहे हैं। G20 वैश्विक खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नीतियाँ बनाता है, जिससे तृतीय विश्व को लाभ होता है।

5. स्वास्थ्य और महामारी प्रबंधन

COVID–19 महामारी ने दिखाया कि तृतीय विश्व के देशों के पास स्वास्थ्य आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। G20 वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने और स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ बनाने के लिए कार्य करता है।

G20 में भारत की भूमिका

G20 (ग्रुप ऑफ ट्वेंटी) वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख मंच है, जिसमें विश्व की 19 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। भारत, जो विश्व की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, 1999 में G20 की स्थापना के समय से ही इसका सक्रिय सदस्य रहा है।[9] G20 भारत को वैश्विक नीति–निर्माण में भाग लेने और अपनी आर्थिक और रणनीतिक प्राथमिकताओं को वैश्विक मंच पर रखने का अवसर प्रदान करता है। भारत की G20 में भूमिका केवल आर्थिक और वित्तीय मामलों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जलवायु परिवर्तन, सतत

www.ijprems.com
editor@ijprems.com
INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

विकास, वैश्विक स्वास्थ्य, डिजिटल अर्थव्यवस्था, बहुपक्षीय सहयोग और भू–राजनीतिक स्थिरता जैसे मुद्दों पर भी योगदान शामिल है। विशेष रूप से, 2023 में भारत की G20 अध्यक्षता ने भारत की वैश्विक स्थिति को और अधिक सशक्त किया और ''वसुधैव कुटुंबकम "One Earth, One Family, One Future'' की अवधारणा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया।

G20 में भारत की प्रमुख भूमिका

1. वैश्विक आर्थिक स्थिरता में योगदान

भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था होने के नाते वैश्विक आर्थिक संतुलन बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। G20 के माध्यम से, भारत वित्तीय स्थिरता, वैश्विक व्यापार सुधार, निवेश बढ़ावा और आर्थिक असमानता को कम करने के लिए नीति–निर्माण में योगदान देता है।

2. सतत विकास और जलवायु परिवर्तन पर नेतृत्व

भारत ने G20 में सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेष रूप से, भारत अक्षय ऊर्जा, जलवायु न्याय और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहा है। 2023 की अध्यक्षता के दौरान, भारत ने ''ग्रीन डेवलपमेंट पैक्ट'' को प्राथमिकता दी और जलवायु वित्त (Climate Finance) में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।[10]

3. वैश्विक स्वास्थ्य और महामारी प्रबंधन

COVID–19 महामारी के दौरान, भारत ने ''वैक्सीन मैत्री'' पहल के तहत 100 से अधिक देशों को वैक्सीन प्रदान की। G20 में, भारत वैश्विक स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने और सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण योगदान देता है।

4. डिजिटल अर्थव्यवस्था और नवाचार

भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में एक अग्रणी शक्ति बनकर उभरा है। G20 में, भारत ने डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI), फिनटेक, साइबर सुरक्षा और डिजिटल समावेशन जैसे मुद्दों को बढ़ावा दिया है। UPI, Aadhaar और CoWIN जैसे भारतीय डिजिटल नवाचार वैश्विक स्तर पर सराहे गए हैं।

5. वैश्विक दक्षिण (Global South) की आवाज बनना

भारत, जो स्वयं एक विकासशील देश है, G20 में विकासशील और गरीब देशों के हितों की रक्षा के लिए कार्य करता है। 2023 की अध्यक्षता के दौरान, भारत ने वैश्विक दक्षिण को प्राथमिकता दी और ''ग्लोबल साउथ समिट'' का आयोजन किया, जिससे छोटे और विकासशील देशों की चिंताओं को G20 में उठाया जा सके।

6. बहुपक्षीय सहयोग और कूटनीति को बढ़ावा देना

G20 भारत के लिए एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक मंच है, जहाँ वह अमेरिका, रूस, चीन, यूरोपीय संघ और अन्य वैश्विक शक्तियों के साथ संबंधों को संतुलित करता है। भारत, गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता की नीति अपनाते हुए बहुपक्षीय सहयोग को मजबूत करने की दिशा में कार्य करता है।

7. व्यापार और निवेश को बढ़ावा

भारत G20 के माध्यम से व्यापार बाधाओं को कम करने और निवेश के नए अवसरों को बढ़ावा देने के लिए कार्य करता है। G20 की बैठकों में भारत ने ''मेक इन इंडिया,'' ''आत्मनिर्भर भारत'' और ''स्टार्टअप इंडिया'' जैसी पहलों को वैश्विक निवेशकों तक पहुँचाने का प्रयास किया।[11]

भारत की G20 अध्यक्षता (2023) और उसकी उपलब्धियाँ

2023 में पहली बार भारत को G20 की अध्यक्षता मिली, जिससे भारत को वैश्विक नेतृत्व प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान भारत ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल कीं।

1. नई दिल्ली घोषणापत्र (New Delhi Declaration)

   सभी सदस्य देशों की सहमति से यह घोषणापत्र पारित हुआ, जिसमें सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल अर्थव्यवस्था, वैश्विक स्वास्थ्य और बहुपक्षीय सुधारों पर ध्यान केंद्रित किया गया।

2. अफ्रीकी संघ (African Union) को स्थायी सदस्य बनाना

   भारत की अध्यक्षता में पहली बार अफ्रीकी संघ को G20 का स्थायी सदस्य बनाया गया, जिससे विकासशील देशों की आवाज को और अधिक बल मिला।

3. वैश्विक डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (Global Digital Public Infrastructure)

   भारत ने G20 में डिजिटल नवाचारों को बढ़ावा दिया और डिजिटल अर्थव्यवस्था को समावेशी बनाने पर जोर दिया।

INTERNATIONAL JOURNAL OF PROGRESSIVE RESEARCH IN ENGINEERING MANAGEMENT AND SCIENCE (IJPREMS)
(Int Peer Reviewed Journal)
www.ijprems.com
editor@ijprems.com
Vol. 05, Issue 02, February 2025, pp : 118-124
e-ISSN : 2583-1062
Impact Factor : 7.001

4. जलवायु वित्त और हरित ऊर्जा पर ध्यान

भारत ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विकसित देशों से अधिक वित्तीय योगदान की माँग की और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश बढ़ाने का आह्वान किया।

5. यूक्रेन संकट पर संतुलित दृष्टिकोण

भारत ने यूक्रेन संघर्ष पर एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया और शांति तथा कूटनीति के माध्यम से समाधान खोजने का समर्थन किया।

भविष्य में G20 में भारत की भूमिका

भारत की G20 में भूमिका आने वाले वर्षों में और भी महत्वपूर्ण होने वाली है। कुछ प्रमुख क्षेत्रों में भारत का योगदान इस प्रकार होगाः

1. वैश्विक आर्थिक पुनरुद्धार भारत वैश्विक व्यापार और निवेश को सुगम बनाने और आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने में योगदान देगा।
2. डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और AI जैसी तकनीकों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देगा।
3. जलवायु परिवर्तन पर प्रभावी कार्रवाई कार्बन न्यूट्रैलिटी, नवीकरणीय ऊर्जा और ग्रीन टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देगा।
4. वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा महामारी से निपटने के लिए अधिक मजबूत अंतरराष्ट्रीय सहयोग स्थापित करेगा।
5. वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए नेतृत्व गरीब और विकासशील देशों के हितों की रक्षा के लिए नई नीतियाँ तैयार करेगा।

निष्कर्षः

G20 वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक प्रणाली का एक महत्वपूर्ण मंच है, जिसका उद्देश्य आर्थिक स्थिरता, सतत विकास, वित्तीय सुधार, व्यापार सहयोग और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर निर्णय लेना है। यह समूह वैश्विक जीडीपी का लगभग 85%, अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 75% और वैश्विक जनसंख्या का 60% प्रतिनिधित्व करता है। इस संदर्भ में, भारत के लिए G20 केवल एक बहुपक्षीय मंच नहीं है, बल्कि एक ऐसा मंच है जो उसकी वैश्विक साख, आर्थिक रणनीति, और कूटनीतिक प्राथमिकताओं को आकार देने में सहायक है। G20 केवल आर्थिक निर्णय लेने वाला समूह नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति के जटिल ताने–बाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह समूह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति संतुलन स्थापित करने, भू–राजनीतिक तनावों को कम करने, और बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करता है। वैश्विक दक्षिण और वैश्विक उत्तर के बीच संतुलन बनाने के लिए G20 एक प्रभावी माध्यम बन चुका है।

जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा सुरक्षा, वैश्विक वित्तीय संकट, डिजिटल गवर्नेंस और महामारी प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर G20 की भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। वैश्विक राजनीति में बहुपक्षीय संगठनों (जैसे कि संयुक्त राष्ट्र) की सीमाओं के कारण, G20 ने एक प्रभावशाली निर्णय लेने वाले निकाय के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है। भारत के लिए G20 बहुआयामी अवसर प्रदान करता है, जिसमें आर्थिक, कूटनीतिक और रणनीतिक लाभ शामिल हैं। भारत की वैश्विक अर्थव्यवस्था में बढ़ती भूमिका, डिजिटल नवाचार, जलवायु नेतृत्व और बहुपक्षीय कूटनीति ने G20 में इसकी स्थिति को और मजबूत किया है। भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में वैश्विक दक्षिण (Global South) की चिंताओं को G20 में प्रस्तुत करने का कार्य कर रहा है। अफ्रीका, लातिन अमेरिका और एशिया के विकासशील देशों के मुद्दों को उठाकर भारत ने यह साबित किया है कि वह सिर्फ अपनी नहीं, बल्कि उन देशों की भी बात करता है जो आमतौर पर वैश्विक मंचों पर पीछे छूट जाते हैं। भारत ने अपनी G20 अध्यक्षता के दौरान एक समावेशी और सहयोगी दृष्टिकोण अपनाया। ''वसुधैव कुटुंबकम'' की अवधारणा के तहत, भारत ने वैश्विक सहयोग, बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और शांति को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

भविष्य में, भारत को G20 में अपनी स्थिति को और प्रभावी बनाते हुए विकासशील देशों की चिंताओं को प्राथमिकता देनी होगी, ताकि यह मंच केवल विकसित देशों का निर्णय लेने वाला निकाय न बनकर एक समावेशी वैश्विक मंच बन सके।

संदर्भ सूची

[1] Singh] A- ¼2022½- "India's Role in the G20 % A Diplomatic Analysis- "Asian Journal of International Affairs, 29¼4½, 112 & 134.

[2] Patel, R- ¼2021½- "Global South and the G20 % India's Leadership in the Emerging World Order- "Journal of Global Politics, 17¼3½, 58 & 75.

[3] Bajpai, K., & Sharma, P- (2020)- "Economic Cooperation and Development in the G20. "Indian Economic Review, 45¼2½, 29 & 49.

[4] Chadha] V. (2019)- "Climate Change and the G20 : India's Contribution to Global Sustainability." Environmental Politics. 24¼5½. 33 & 52.

[5] Jha. M. (2023)- "India's Presidency of G20 : A Vision for Global Economic Recovery." Global Economic Perspectives, 38¼6½, 82 & 101.

[6] Kumar, R. (2022)- "India and the G20 : Shaping a New World Order. "International Affairs Review, 28¼7½, 46 & 65.

[7] Basu, P. (2021). "The G20 and Global Governance : India's Strategic Interests. "Global Politics Journal, 20¼2½, 103 & 121.

[8] Sahni, S. (2023). "The Role of G20 in Global Financial Stability : India's Contribution. "World Economic Forum Review, 35¼4½, 90 & 110.

[9] Reddy, S. (2020). "Trade Policies and India's Participation in G20 Negotiations. "Journal of International Trade, 15¼2½, 56 & 74.

[10] Das, A. (2021). "The Impact of G20 on Emerging Economies : India's Perspective. "Emerging Economies and Politics, 19¼3½, 112 & 130

[11] Raghavan, V. (2022). "India and the G20 : Strengthening South & South Cooperation." Development Studies Quarterly, 14¼1½, 45&61